

रत्न Spr. 1412. परम ŚRĪJAS. 14, 22. ŚĪH. D. 63, 16. सनातन M. 6, 79. शा-
 स्यत 12, 123. मक्तु BHAG. 14, 3. 4. Obgleich n., doch mit einem m. construiert
 AV. 10, 7, 32. 34. यो भूतं च भव्यं च सर्वं यथाधितिष्ठति । स्वर्ग्यस्य च के-
 वलं तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः 8, 1. — ब्रह्मचारी जनयन्ब्रह्मार्पो लोकं प्रे-
 ज्ञापतिं परमेश्वरं विराजन् 11, 3, 7. 22. ब्रह्मचारी ब्रह्म धातुर्द्विभक्तिं त-
 स्मिन् देवा अधि विष्टे समोताः 21. VS. 19, 31. 41. TBR. 2, 1, 40, 3. देवा वै
 ब्रह्मवदन्त TS. 3, 5, 2, 2. ब्रह्ममुखा वै प्रजापतिः प्रजा संसृजत 5, 2, 1. 4.
 ब्रह्म देवानां श्रेष्ठं ब्रह्मणा गवापृथिवी विष्ट्ये CAT. BR. 8, 4, 1, 3. 11, 2,
 3, 1. सर्वं वै ब्रह्म प्रजापतिः 7, 3, 1, 42. 6, 1, 2, 8. 13, 6, 2, 8. 14, 5, 2, 1. म-
 र्त्या ऽमृतो भवत्यत्र ब्रह्म समसृते 7, 2, 9. ब्रह्मणाः सायुष्यं सलोकातां जयति
 11, 4, 2, 1. fgg. TAITT. ĀR. 2, 9, 2. 14, 3. M. 6, 81. BHAG. 4, 24. VERDANTAS.
 (Allah.) No. 10. 18. das Brahman wohnt auch in der menschlichen
 Seele: ये पुरुषे ब्रह्म विदुस्ते विदुः परमेश्वरं AV. 10, 7, 17. तस्माद्दि-
 विद्वान्पुरुषमिदं ब्रह्मेति मन्यते 11, 8, 32. पुरुषो ब्रह्मणा वेदं यस्याः पुरुष-
 उच्यते 10, 2, 28. fgg. = तन्न AK. MED. = ब्रह्मन् AK. 3, 4, 28, 112. =
 अध्यात्म H. an. HALAJ. 3, 82. = प्रधान Cit. beim Schol. zu PRAB. a. a. O.
 = त्रेत्रस ebend. = मोक्ष die Erlösung von den Banden der Existenz
 (vgl. Stellen wie परं ब्रह्मभ्येति) ebend. H. 74. HALAJ. 1, 124. — 7) der
 Stand, welcher Inhaber und Pfleger des heiligen Wissens ist; die Theo-
 logie so v. a. die Theologen, Klerisei, Brahmanenschaft: ब्र० तत्र AV.
 2, 13, 4. 9, 7, 9. 12, 5, 8. 15, 10, 3. 4. VS. 6, 3. 7, 21. 10, 10. 20. 25. 30. 3.
 AIT. BR. 3, 11. 7, 19. 21. TS. 3, 3, 1. CAT. BR. 1, 2, 1, 7. 3, 5, 5. 2, 1, 4, 22.
 6, 6, 2, 14. 4, 13. 13, 1, 5, 3. विशो राजा ब्रह्मण एधि गोप्ता LĪTJ. 3, 10. 5.
 9. KATHOP. 2, 25. ब्रह्मैव संनिपत्य स्यात्तत्र हि ब्रह्मसंभवम् M. 9, 320. ब्र-
 ह्मन्तः तत्रम् 321. नाब्रह्म तत्रमधोति नातत्रं ब्रह्म वर्धते 322. ein Mitglied
 der Brahmanenschaft, ein Brahmane: तस्य त्रेत्रे ब्रह्म जज्ञे BUJG. P. 9,
 17, 11. तत्राद्रह्म र्भवत 21, 19. — Nach NAGH. 2, 7 = अन्न Speise, nach
 10 = धन Reichthum.

2. ब्रह्मन् (wie eben) m. 1) Beter, Andächtiger und dann Beter von
 Beruf d. h. Priester, Brahmane (AK. 3, 4, 28, 117. H. an. 2, 276. MED.
 II. 96. fgg. HALAJ. 3, 82); auch Kenner der heiligen Sprüche (Zaubersprü-
 che), des heiligen Wissens überh. NIK. 1, 8. गायत्रिन् श्रुक्त्वं ब्रह्मन् RV.
 1, 10, 1. ब्रह्मणो यस्यामर्धत्यग्निः सामा यजुर्विदः AV. 12, 1, 38. RV. 1,
 80, 1. यो ब्रह्मणो प्रथमो गो श्रुर्विदन् 101, 5. यदिन्द्राग्निं मर्यः स्वे ऽत्रोणे
 यद्ब्रह्मणि राज्ञेन वा 108, 7. 138, 6. 164, 35. 2, 1, 3. 12, 6. 39, 1. 4, 9. 4. 5,
 31, 4. 32, 12. 40, 8. ब्रह्मणं ब्रह्मवाक्यं गोर्निः सर्वायमग्निमयम् (कुवे, 6,
 43, 7. 8, 32, 6. 33, 7. ब्रह्मेवं तन्मयः 81, 30. 83, 5. इन्द्रो ब्रह्मेन्द्र शर्षः 16,
 7. यो यज्ञाति यज्ञात् इत्सुनवच्च पचाति च । ब्रह्मेदिन्द्रस्य चाकन्त् 31, 1.
 66, 5. Bṛhaspati heisst ब्रह्मा देवानाम् RV. 10, 141, 3, worunter nach
 späterer Auffassung die Bed. 2. verstanden wird. CAT. BR. 1, 7, 4, 21. 4,
 6, 6, 9, 2, 5. KĪTJ. ÇR. 2, 1, 19. KAUC. 3. VS. 2, 12. यस्मिन्ब्रह्मा राज-
 नि पूर्व एति RV. 4, 30, 8. 9. 7, 33, 11. तत्रा रिष्टे हतं भिषगब्रह्मा मुन्वत्त-
 मिच्छति 9, 112, 1. 113, 6. 10, 32, 2. सोमं यं ब्रह्मणो विदुर्न तस्याम्नाति
 कश्चन 83, 3. 16. 34. 35. वदन्ब्रह्मावदतो वनीयान् 117, 7. स ब्रह्मा वेदि-
 ता स्यात् AV. 10, 7, 24. 1, 3. 4. 30. 33. 2, 7, 2. 4, 33, 1. 2. 5, 8, 5. 17, 8. 18,
 7. 19, 8. 6, 122, 5. 8, 9, 3. 11, 1, 25. AIT. BR. 3, 3. TS. 4, 1, 3, 1. CAT. BR. 11,
 4, 2, 2. 6, 3, 10. PĀṆKAV. BR. 8, 6, 8. ÇĀṆKH. ÇR. 14, 16, 8. ब्रह्मराज्ञ्यो VS.
 26, 2. AV. 19, 32, 8. ब्रह्मन्त्रिपविद्योनि M. 1, 80. MBh. 1, 6337. Spr. 4639.
 BRAHMA-P. in LA. 53, 20. vom Monde (nach dem Comm.) VS. 23, 13. च-

V. Theil.

न्द्रमा वै ब्रह्मा CAT. BR. 12, 1, 1, 2. — 2) Kenner des heiligen Wissens im
 engern Sinne: derjenige Hauptpriester, welcher die Leitung des Opfers
 hat und die drei Veda kennen soll. Seine Genossen sind: Brāhmaṇā-
 kṣāmsin, Āgñidhra und Potar. MÜLLER, SL. 447. fgg. 469. H. an.
 MED. Von älteren Stellen kann man hierzu vergleichen RV. 2, 1, 2. 9.
 96, 6. 10, 71, 11. 107, 6. AV. 18, 4, 15. 20, 2, 3. — AIT. BR. 3, 24. 33. fgg. 7,
 1. 16. 26. 8, 9. CAT. BR. 1, 1, 1, 15. 7, 4, 18. 19. 21. 5, 1, 5, 1. 5, 5, 16. 6, 2, 3.
 40. 12, 8, 2, 23. 13, 2, 6, 9. 14, 6, 1, 7. TS. 1, 8, 9, 1. 2, 3, 11, 4. 3, 3, 2, 1. ĀÇV.
 ÇR. 1, 12. 9, 4. ब्रह्माणमेव प्रथमं वृणीति GRHJ. 1, 23. 3. 4, 8, 15. KĪTJ. ÇR.
 3, 3, 6. 5, 8, 24. 14, 4, 17. ब्रह्मैवैकं श्रुत्विक्याकयत्तेषु स्वयं होता भवति
 GOBH. 1, 9, 7. P. 5, 1, 136. M. 8, 209. HARIV. 11360. SUÇR. 1, 123, 12. VP. 276. —
 3) = ब्रह्मणाच्छंस्मिन् CAT. BR. 4, 6, 6, 5. ÇĀṆKH. ÇR. 16, 21, 5. KĪTJ. ÇR. 9, 8.
 11. 11, 8. — 4) Brahman (der), das persönlich gedachte Brahman (s.
 1. ब्रह्मन् 6.); im System Schöpfer der Welt und oberster Gott des in-
 dischen Pantheon's; als Product der Abstraction ist er kein Volksgott
 und hat keinen Cult. AK. 1, 1, 4, 11. 3, 4, 28, 117. TRIK. 1, 1, 25. H. 212.
 H. an. MED. HALAJ. 1, 6. 3; 61. 82. Cit. beim Schol. zu PRAB. 23, Çl. 12.
 In alten Büchern nicht bekannt; an manchen Stellen, wo die Comm.
 m. annehmen, als n. zu fassen. TBR. 2, 7, 1, 1 (Comm.). ब्रह्मणो ऽधि-
 पतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु TAITT. ĀR. 10, 17. Agni, Brahman, Vishṇu.
 Rudra 35. 80. ĀÇV. GRHJ. 1, 2, 6. प्रजापतिर्ब्रह्मा वेदा देवाः 3, 4, 1. ÇĀṆKH.
 GRHJ. 4, 9. ब्रह्मा वै गार्हपत्ये स्यादोश्चरो दत्तिणे तथा । विष्णुराक्षणीये तु
 अग्निहोत्रे त्रयो ऽग्नयः GRHJASAMG. 1, 8. Lehrer des Praḡāpati KHĀND.
 UP. 8, 15. तस्मिन् (अण्डे) जज्ञे स्वयं ब्रह्मा सर्वलोकपितामहः M. 1, 9, 2, 225.
 ब्रह्मणाः सद्यः शाश्वतम् 244. 3, 89. ब्रह्मणस्तो सभा विदुः 8, 11. 12, 50. लो-
 ककर्तार R. 1, 2, 26. 14. 5. 12. 37, 4. अथ्यक्तप्रभवो ब्रह्मा शाश्वतो नित्य
 अव्ययः । तस्मान्मरोचिः संज्ञे 70, 19. 6, 74, 35. ŚRĪJAS. 1, 1, 12, 20. 22. 33.
 Spr. 1994. fgg. द्विकर्णस्य तु मन्त्रस्य ब्रह्माप्यतं न गच्छति 3061. 3271.
 ब्रह्मा कमाण्डलुकारश्चतुर्मुखः पङ्कजासनस्थश्च VARĀH. BRH. S. 38, 41 in Verz.
 d. B. H. 246. BRAHMA-P. in LA. 53, 12. Verz. d. Oxf. H. 31, a, 4. 6. 87, b.
 32. 97, b, 38. KATHAS. 1, 30. नभीकृदाम्बुजादामोदह्मा विश्वसृजो पतिः
 BUJG. P. 1, 3, 2. BUJG. Intr. 131. अनेकब्रह्मशतसकल LALIT. ed. Calc. 33.
 16. सप्त ब्रह्माणः sind die 7 Praḡāpati (Marīki, Atri, Aṅgiras,
 Pulastya, Pulaha, Kratu und Vasishṭha) HARIV. 42. ब्रह्मप्रजापती
 P. 6, 3, 26. Vārtt. 2. gāṇa दधिययश्चादि zu P. 2, 4, 14. KAUC. 139. LĪTJ.
 10, 13, 8. ब्रह्मा सदा पतिः (सकृपतिः) BUJG. Intr. 610. Lot. de la b. l. 3.
 LALIT. ed. Calc. 49, 5. — 3) so v. a. ब्रह्मण आयाः Brahman's Lebenszeit:
 कुम्भीपाके तप्ततले तिष्ठति ब्रह्मणः शतम् PĀṆKAV. 2, 6, 9. — 6) die Sonne
 H. Ç. 8. — 7) Rein. Çiva's Cit. beim Schol. zu PRAB. a. a. O. — 8) an-
 geblich so v. a. Veda (vgl. 1. ब्रह्मन् 3.): अस्तु मे ब्रह्माभिगुप्तः PĀR. GRHJ.
 3, 3. — 9) Synonym von बुद्धि Intellect TATTVA. 8. Cit. beim Schol. zu
 PRAB. a. a. O. — 10) N. eines Sterns, δ aurigae ŚRĪJAS. 13, 9. — 11) Bez.
 eines best. Joga H. an. MED. — 12) N. pr. des Dieners des 10ten Ar-
 hant's der gegenwärtigen Avasarpinī H. 42. — 13) N. pr. eines
 Zaubersers RĪGĀ-TAN. 3, 456. 475. fgg. — In H. an. und im Cit. beim Schol.
 zu PRAB. 23, Çl. 12 werden m. und n. nicht unterschieden, indem alle
 Bedeutungen dem n. zugetheilt werden, was wohl nur eine Nachlässig-
 keit ist. — Vgl. अ०, श्रु०, तुवि०, मु०.

ब्रह्मनदी (2. ब्रह्मन् + न०) f. Brahman's Fluss, Bein. der Sarasvatī

9*